Subject specific syllabus

संगीत

संगीत विज्ञान और श्रुतियों का अध्ययन

कंपन और आवृत्ति; ध्वनि की ध्वनि की ध्वनि की तीव्रता और उसका वाइब्रेटर, स्वर और वाद्य श्रेणियों से संबंध; आयाम, लय, गुण और संगीतमय और संगीतहीन स्वर (स्वयंभू स्वर); संगति और असंगति; रागों के मुख्य प्रकार; अवशोषण, प्रतिध्वनि; ध्वनि की प्रतिध्वनि और प्रतिध्वनि, श्रुति की अवधारणा (इस पर विभिन्न मत)। लोचन, अहोबल, पुंडरीक, रामामात्य, सोमनाथ आदि के अनुसार विभिन्न श्रुतियों पर शुद्ध और विकृत स्वरों का स्थान। व्यंकट-मुखी के 72 मेलों, भातखड़े के दस थाट और आधुनिक बत्तीस थाट का तुलनात्मक अध्ययन।

रागों और तालों का अध्ययन

- निम्नलिखित रागों का आलोचनात्मक, विस्तृत और तुलनात्मक अध्ययन: - सुधाकल्याण, देशकार, कामोद, छायानट, गौड़सारंग, जैजैवंती, रामकली, पूरिया, मारवा, सोहनी और शंकर,
- उपरोक्त रागों में न्यास, अल्पत्व, बहुत्व, आविर्भाव और तिरोभाव का नोट्स के माध्यम से चित्रण।
- विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ निम्नलिखित तालों का ज्ञान और डुगुन, तिगुन, चौगुन और अड़ा में तालों का लेखन: - त्रिताल, एकताल, रूपक, तीवरा, सूलताल, झूमरा, धमार और जट ताल।
- उपरोक्त रागों में अलाप, तान, बोलतन के साथ खयाल और डुगुन, तिगुन आदि में ध्रुवपद और धमार में गीतों को स्वरबद्ध करना। दिए गए स्वरों से रागों की पहचान।
- वाद्य संगीत

संगीत विज्ञान और श्रुतियों का अध्ययन

कंपन और आवृत्ति, स्वरमान और वाइब्रेटर के साथ इसका संबंध, ध्वनि की स्वर और वाद्य श्रृंखला। आयाम, लय, संगीत के गुण, असंगीत स्वर (स्वयंभू स्वर), संगति और असंगति। स्वरों के मुख्य प्रकार, अवशोषण, प्रतिध्वनि, प्रतिध्वनि और ध्वनि की प्रतिध्वनि, श्रुति की अवधारणा (इस पर विभिन्न मत) लोचन, अहोबल, पुंडरीक राममात्य, सोमनाथ आदि के अनुसार शुद्ध और विकृत स्वर का स्थान। उत्तरी और दक्षिणी सप्तक के स्वरों का तुलनात्मक अध्ययन, व्यंकटमुखु के 72 मेलों का आलोचनात्मक अध्ययन। भातखंडे के दस थाट और आधुनिक बत्तीस थाट।

रागों एवं तालों का अध्ययन

- निम्नलिखित रागों का आलोचनात्मक, विस्तृत और तुलनात्मक अध्ययन:- सुधाकल्याण, देशकर, कामोद, छायानट, गौड़सारंग, जयजयवंती, रामकली, पूरिया, मारवा, सोहनी और शंकर।
- उपरोक्त रागों में न्यास, अल्पत्व, बहुतत्व, तिरोभाव और अविर्भाव का स्वरों के माध्यम से चित्रण। डुगुन, तिगुन, चौगुन और अदा में विभिन्न प्रकार की लयकारी और ताल के लेखन के साथ निम्नलिखित तालों का ज्ञान: -
- त्रिताल, झपताल, चौताल, केहरवा, दादरा, तिलवाड़ा, रूपक, तीवरा, सूल-ताल, धमार और जट-ताल।
- उपरोक्त रागों में अलाप, तोड़ा, झाला के साथ गतों को लिखना, दिए गए स्वरों से रागों की पहचान करना।
- ताल वाद्य बजाने वाले अभ्यर्थियों को निम्नलिखित तालों का गहन विस्तृत और तुलनात्मक अध्ययन अवश्य करना चाहिए:- तीनताल, झपताल, रूपक, चौताल, सूलताल, तीवरा, तिलवाड़ा, दादरा, कहरवा, पंजाबी, जट्टल।
- उन्हें लयकारी, तुकारा, परना, पेशकार, क्वाडा, अवर्तन, बंट, किसिम, पलटा, रेला, लग्गी, लड़ी आदि के विभिन्न प्रकारों को भी जानना चाहिए, जहाँ उपर्युक्त तालों में लागू हो, उपरोक्त तालों में सभी पदार्थों को संकेतन में लिखना और दिए गए बोलों के लिए पहचानना।

स्वर संगीत

संकेतन प्रणाली, स्केल और संगीतकारों की जीवनी का अध्ययन।

- भातखंडे और विष्णुदिगंबर और पश्चिमी संगीत की संकेतन प्रणाली, इन संकेतों में सरल गीतों का लेखन। पश्चिमी नोट, नोटों के विभिन्न प्रकार के अंतराल। समय हस्ताक्षर, विभिन्न संगीत स्केल, डायटॉनिक स्केल, भातखंडे और पश्चिमी संगीत के स्केल का तुलनात्मक अध्ययन। सामंजस्य और माधुर्य, पंडित श्रीनिवास के अनुसार वीणा पर नोटों की व्यवस्था, उत्तरी और दक्षिणी ताल पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय संगीत में विभिन्न विद्वानों और संगीतकारों का योगदान।
- भातखंडे, विष्णुदिगम्बर, तानसेन, अमीर खुसरू, फैय्याज खान, पं. की जीवनियाँ। रविशंकर, पं. राम सहाय, अहमदजान थिरकवास, कुदाउ सिंह, नाना साहब पांसे।

संगीत शैलियों एवं रागों का अध्ययन

- गीत, गंधर्व, गण, देशी संगीत, स्थिर, मुखाचलन, अक्षिप्तिका, निबद्ध और अनिबध गण, रागलक्षण, रागलप, अलाप्ति स्वस्थ नियम, प्रचलित अलाप, तं; मींड.

- न्यास, अलापत्व, बहुतत्व, तिरोभाव और अविर्भाव के चित्रण के साथ निम्नलिखित रागों का आलोचनात्मक विवरण और तुलनात्मक अध्ययन।
- ललित, दरबारी, अदाना, मिया-मल्हार, गौडमलहार, बहार, टोडी, मुल्तानी, देशी, जोगिया और विभास।
- विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ निम्नलिखित तालों का ज्ञान तथा डुगुन, तिगुन, चौगुन और अड़ा में तालों का लेखन:
- त्रिताल, एकताल, झपताल, चौताल, कहरवा, दादरा, तिलवाड़ा, रूपक, तीवरा, सूलताल, झूमरा, धमार और जटाल तथा पंचम सवारी।
- भारतीय संगीत की विभिन्न शैलियों जैसे ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, टप्पा, चतुरंग, तराना, त्रिवत आदि के वर्णन तथा उनके विकास के साथ तुलनात्मक और विस्तृत अध्ययन, अलाप, तान, बोलतान आदि के साथ उपरोक्त रागों में गीतों के स्वरों का लेखन तथा ध्रुवपद और धमार में विभिन्न लयकारियों के साथ, दिए गए स्वरों से रागों की पहचान। किसी भी संगीत विषय पर एक लघु निबंध।

वाद्य संगीत

- भातखंडे, विष्णुदिगंबर और पश्चिमी संगीत की स्वर प्रणाली। इन संकेतों में सरल गतों का लेखन। पश्चिमी स्वर। स्वरों के विभिन्न प्रकार के अंतराल। समय संकेत, विभिन्न संगीत पैमाने डाय-टॉनिक स्केल, पाइथोगोरियन स्केल, टेम्पर्ड स्केल, मेजर स्केल, माइनर स्केल आदि। भातखंडे और पश्चिमी संगीत के स्केल का तुलनात्मक अध्ययन। सामंजस्य और राग, पं. श्रीनिवास के अनुसार वीणा पर स्वरों का स्थान।
- उत्तरी और दक्षिणी ताल पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन। भारतीय संगीत में विभिन्न विद्वानों और संगीतकारों का योगदान।
- भातखंडे, विष्णुदिगंबर, तानसेन, अमीर खुसरो फैय्याज खान, ओंकारनाथ ठाकुर, अलाउद्दीन खान, पं. रविशंकर, पं. राम सहाय, अहमद जान थिरकवा, कुदाऊ सिंह, नाना साहब पानसे की जीवनी।

शैलियाँ, बाज, राग और ताल का अध्ययन

- गीत, गंधर्व, गण, देशी संगीत, स्थिर मुखचलन, अक्षिप्तिका निबद्ध और अनिबद्ध गण, रागलक्षण, राग-आलाप, रूपकलाप, अल्पति स्वस्थ-नियम, प्रचलित अलाप और तन, ज़मज़मा, मींड, सुतघसीत, जोर अलाप, तोड़ा।
- निम्नलिखित रागों का आलोचनात्मक विस्तृत और तुलनात्मक अध्ययन, उनमें न्यास, अल्पत्व, बहुत्व, तिरोभाव और अविर्भाव के चित्रण के साथ।

- विभास, ललित, दरबारी कान्हड़ा, अदाना, मियाँ मल्हार, गौड़ मल्हार, बहार, तोड़ी, मुल्तानी, देशी और जोगिया। दिए गए सुरों से राग की पहचान। निम्नलिखित तालों का ज्ञान: अदा चार्टल, एकताल, दीपचंदी, धमार, फरोडस्त, पंचम सवारी, कुम्भ, शिखर।
- ताल वाद्य यंत्रों की पेशकश करने वाले उम्मीदवारों को निम्नलिखित तालों का महत्वपूर्ण विस्तृत और तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिए: अदाचारताल, एकताल, पंचम सवारी, फरोडस्त, धमार, कुंभ, शिखर, मैट ताल, धुमाली, दीपचंदी, अद्धा ताल।
- उन्हें टुकरा, परन, तिहाई, कयाद, पलटा, रेला, पेशकार, मुखरा, तिपल्ली, चौपल्ली, चक्करदार बोल, फरमाइशी, परना, लोम-बिलोम, चारबाग, स्तुति के बोल, झूलना के बोल भी आना चाहिए। ऊपर वर्णित तालों में धमार और बेदमदार तिहाई।
- दिए गए बोलों से ताल पहचानने की क्षमता, सभी बातों को संकेताक्षरों में लिखना।
- किसी भी संगीत विषय पर एक लघु निबंध। बैठकों, बजाने की शैलियों और घरानों का ज्ञान। विभिन्न लयकारियों में ताल लिखने की क्षमता, विभिन्न प्रकार के संगीत वाद्ययंत्रों और उनके वर्गीकरण की प्रणाली का ज्ञान।

स्वर संगीत

संगीत का इतिहास और रागों और तालों का वर्गीकरण

13वीं शताब्दी ई. तक के प्राचीन काल के संगीत का संक्षिप्त इतिहास रागों और तालों के वर्गीकरण के साथ। जाति रागों का विकास, मध्यकालीन और आधुनिक काल के संगीत का संक्षिप्त इतिहास, प्रबंध। भारतीय शास्त्रीय संगीत का पुनरुद्धार, हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत प्रणालियों की तुलना। संगीत के विकास और प्रसार में आधुनिक विज्ञान का प्रभाव। संगीत के किसी भी सामान्य विषय पर निबंध।

संगीत शैलियों और रागों का अध्ययन

- न्यास, अलपत्व, बहुत्व, आविर्भाव और तिरोभाव के उदाहरणों के साथ निम्नलिखित रागों का आलोचनात्मक, विस्तृत और तुलनात्मक अध्ययन।
- श्री, पूरिया-धनश्री, बसंत, परज, हिंडोल, चंद्रकौंस, सुधासारंग, मधुवंती, बागेश्वरी, जौनपुरी, मालगुंजी।
- उत्तर और दक्षिण के संगीत की विभिन्न शैलियों, संगीत के विभिन्न घरानों, ग्राम, मूर्छा, विभिन्न प्रकार के गमक, गीतों के स्वरलेखन का आलोचनात्मक अध्ययन। किसी भी राग में कोई भी गीत रचने की क्षमता।
- विभिन्न प्रकार की लयकारी अदा के साथ निम्नलिखित तालों का ज्ञान - चौताल, ब्रह्मा, लक्ष्मी, रुद्र, शिखर, पंचम सवारी।

व्यावहारिक (मंच प्रदर्शन)

- प्रत्येक राग में एक द्रुत ख्याल और निम्नलिखित रागों में कम से कम पाँच विलम्बित ख्याल:
- श्री, बसंत, परज, पूरिया-धनश्री, हिंडोल, चंद्र कौंस, सुधासारंग, मधुवंती, बागेश्वरी, जौनपुरी, मालगुंजी।
- अभ्यर्थियों को पाठ्यक्रम के राग की अपनी पसंद का आधे घंटे तक मंच प्रदर्शन देना होगा। उन्हें ठुमरी रचना भी गानी होगी।

वाद्य संगीत

संगीत का इतिहास और रागों और तालों का वर्गीकरण

- प्राचीन काल के संगीत का संक्षिप्त इतिहास 13वीं शताब्दी ई. तक, विशेष रूप से नाट्यशास्त्र, बृहद्देशी, संगीत रत्नाकर के संदर्भ में। रागों और तालों का वर्गीकरण। जातियों, रागों का विकास। मध्यकालीन काल में संगीत का संक्षिप्त इतिहास। भारतीय शास्त्रीय संगीत का पुनरुद्धार। हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत प्रणाली की तुलना। संगीत के विकास और प्रसार में आधुनिक विज्ञान का प्रभाव। संगीत के किसी भी सामान्य विषय पर निबंध।
- संगीत शैलियों और न्यास, अल्पत्व, बहुत्व, आविर्भाव और तिरोभाव के चित्रण के साथ निम्नलिखित रागों का आलोचनात्मक, तुलनात्मक और विस्तृत अध्ययन:
- श्री, पूरिया - धनश्री, बसंत, परज, हिंडोल, चंद्रकौंस, शुद्ध सारंग, मधुवंती, बागेश्री, जौनपुरी, मालगुंजी।
- उत्तर और दक्षिण के संगीत की विभिन्न शैलियों का आलोचनात्मक अध्ययन। संगीत के विभिन्न घराने, ग्राम, मूर्छना, विभिन्न प्रकार के गमक, गतों के स्वरलेखन। किसी भी राग में कोई भी गत रचने की क्षमता।
- विभिन्न प्रकार की लयकारी के साथ निम्नलिखित तालों का ज्ञान और डुगुन, तिगुन, चौगुन, अडा और कुआड़ और बियाड़ में ताल लिखना।
- बसंत, रुद्र, लक्ष्मी, गजजम्पा, पश्तो, ब्रह्मा। ताल वाद्य यंत्रों की पेशकश करने वाले अभ्यर्थियों को विभिन्न प्रकार के बाज और टेबल और पखावज की शैलियों को भी जानना चाहिए और पेशकार, परन, तिहाईस, तुकारस, किशिमे, क्यादास, पलटस, रिलेस, मुखरस, त्रिपल्ली, चौपल्ली, चक्करदार, बोल, फरमाइशी परन, कमली परन, लोम-बिलोम, चारबाग, स्तुति के बोले, झूलन के बोले, जबाबी को भी जानना चाहिए। परन, नवाहक्का, दमदार और बेदम की तिहाई जहां निम्नलिखित तालों में लागू होती है, उनके आलोचनात्मक, विस्तृत और तुलनात्मक अध्ययन के साथ:
- रुद्र, बड़ी स्वरी, जट्टल, बसंत, लक्ष्मी, गज झंपा, ब्रह्म ताल, अष्ट मंगल, गणेश ताल, मणि ताल, पश्तो।
- तालों में विभिन्न प्रकार के छंद जहां लागू हों और विभिन्न लयकारी, डुगुन, तिगुन, चौगुन, अदा, कुआद और बियाद का लेखन।